“सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की आरती”...

ओम जय गुरु टेऊँराम ,स्वामी जय गुरु टेऊँराम,
पर-उपकारी जगत उदारी,तुम हो पूरन-काम...

1.जब-जब प्रेमिनि निज हित कारण,तुम को पूकारा, { स्वामी }
तब-तब गुरु अवतार धरे तुम, सब को निस्तारा...
ओम जय गुरु टेऊँराम............

2. प्रेम प्रकाशी मन्डलाचार्या, मन्त्र साक्षी सतनाम, { स्वामी }
धर्म सनातन के प्रचारक, निति निपूण अभिराम...
ओम जय गुरु टेऊँराम........

3. देश विदेश में मन्डली लेकर ,पावन दे उपदेश, { स्वामी }
आतम रुप लखाया सबको, हरिया ताप कलेश...
ओम जय गुरु टेऊँराम........

4.पूरन अचल समाधी तेरी सिध्द आसन बाजे, { स्वामी }
रुप मनोहर सुन्दर लोचन, देखते मन राजे......
ओम जय गुरु टेऊँराम.........

5.आत्म स्थित वचन के पूरे , योगी ईनिद्रय जती, { स्वामी }
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती......
ओम जय गुरु टेऊँराम..............

6. धन-धन मात-पिता कुल तेरा, धन तव साधू-सुजान, { स्वामी }
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शूभ स्थान..
ओम जय गुरु टेऊँराम............

7. सुर-नर मुनि-जन हरिजन गुनी जन गावन गुन तुम्हरे, { स्वामी }
अन्त न पाई सके नर कोई,महिमा अपर-परे....
ओम जय गुरु टेऊँराम....................

8.जो जन तुम्हारी आरती गावे, पावे सो मुक्ती, { स्वामी }
साध-सगति को हरदम दीजे, पूरन गुरु-भगती...
ओम जय गुरु टेऊँराम....

ओम जय गुरु टेऊँराम ,स्वामी जय गुरु टेऊँराम,
पर-उपकारी जगत उदारी,तुम हो पूरन-काम......

सतगुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज जी की आरती.....

ओम जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द,

धर्म करम का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द.....ओम जय गुरु सर्वानन्द.........

1. तुम हो दाता दीन दयालू, सबके हितकारी, { स्वामी }

शेष शरदा नित गुन गावे,महिमा अती बारी.......

ओम जय गुरु सर्वानन्द...............

2. तन पर चोला गेरु रंग का, सिर पे जटा धारी, { स्वामी }

कर कमलो में लाटी सोहे, मोहे नर नारी...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द...............

3. अपने गुरु की निज वचनो को, घर-घर पहूँचाया, { स्वामी }

भूले-भटके दीन जनो को सत मार्ग लाया.............

ओम जय गुरु सर्वानन्द.............

4.आधम उधारण कष्ट निवारण भगतनभव हरी, { स्वामी }

भाव जल तारण पार उतारण देह घारी...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द.............

5.देश-विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फेलाई, { स्वामी }

सोहम शब्द का मन्त्र दे वह ज्योति दिखलाई...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द............ज्ञ

6. अजर अमर ओर अज अविनाशी, घट-घट के ज्ञियाता, { स्वामी }

कण-कण में तुम सर्वव्यापक,पुरन गुरु दाता......

ओम जय गुरु सर्वानन्द................

7. परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी, { स्वामी }

शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी............

ओम जय गुरु सर्वानन्द............

8.टँऊ राम के क्रपा पात्र तुम हो,भक्ती भण्डार, { स्वामी }

गुरु भगत बन गुरु भक्ती का खूब किया प्रचार.......

ओम जय गुरु सर्वानन्द...................

9. पूरण गुरु की पूरी आरती जो-जो नर गावे, { स्वामी }

पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण पद पावे...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द..............

ओम जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द............,

सतगुरु स्वामी शान्ती प्रकाश महाराज जी की आरती......

ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ती प्रकाश,
प्रेम के सागर, सतगुरु मेरे, मन में करो निवास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..........
1. मात-□ता थे धर्म की मूर्ती, उ□जा □त-स□त, { स्वामी }
बच□न में ही मन में जागी, क्रष्ण दर्श की प्यास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश...............
1. टेँऊराम के श्री चरणो में, जीवन सौं□ दिया, { स्वामी }
उनकी दया से □रम □द □ाया,अदभूत किया विकास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश.............
3.वेद वानी ओर गुरुवाणी का , □ाया ज्ञान भण्डार, { स्वामी }
प्रेम प्रकाशी मण्डल में चमके, सूरज सम सुख रास......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश...............
4.देश-विदेश में भ्रमण करके, सब को मोह लिया, { स्वामी }
सतनाम साक्षी मन्त्र ज□ा कर,काटी यम की फास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश................
5. देश धर्म की रकक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया, { स्वामी }
दीन जनो की सेवा में ही □ाया □रम हूलास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश.................
6. एकादशी ओर गऊ सेवा का, खूब किया प्रचार, { स्वामी }
कण-कण में श्री क्रष्णा को देखा, किया भेद भ्रम नास......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश.............
7.जो-जो दर्श करे सत्गूरू का, मन में रख विशवास , { स्वामी }
आशा उसकी □रण होवे,कारज होवन रास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश.............
8. □रण शरदा से जो प्रेमी आरती यह गावे, { स्वामी }
सुख सम□ती ओर सुमती □ावे, अमरा□र हो वास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश.............
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ती प्रकाश,
प्रेम के सागर, सतगुरु मेरे, मन में करो निवास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..........

सतगुरु स्वामी हरीदास महाराज जी की आरती...

ओम जय गुरु हरीदासराम , स्वामी जय गुरु हरीदासराम ,
सतचित आनन्द ब्रह्म स्वरुपा-सर्वा सुखन खे धाम.....
ओम जय गुरु हरीदासराम.......

1. अमरापुर से आये जोगी-लेकर सत सन्देश,
अमृतवाणी स□ सुख खानी-अमर किया उपदेश.......
ओम जय गुरु हरीदासराम...........

2. □ालापन से गुरु चरणो में-मनवा तव लगा ,
घर को त्यागा भया विरागा, सत्गुरु र□ा पागा.......
ओम जय गुरु हरीदासराम.........

3. सत्गुरु टेँऊराम साहि□ में-अटल रख विशवास ,
सतनाम साक्षी जाप जपाकर-प्रेम किया प्रकाश.......
ओम जय गुरु हरीदासराम.........

4. सत्गुरु सर्वानन्द की सेवा-तन मन से कीनी ,
पूरण गुरु की कृपा पाकर-सूरति शब्द भीनी........
ओम जय गुरु हरीदासराम.......

5. निरमोही, निर्मान निसँगी-निर्भय निष्कामी ,
निरइच्छा हो जग में विचारे-सत्गुरु सुखधामी......
ओम जय गुरु हरीदासराम...........

6.त्यागा तपो मय जीवन दारे-सत्गुर गुण गाया ,
देश-विदेशा सत उपदेशा-स□ को पहुँचाया........
ओम जय गुरु हरीदासराम............

7 नभ में, जल में पावक थल में-ज्योति तेरी जागे ,
श्रदा से जो शरनी आए-भय ता□ा भाग ......
ओम जय गुरु हरीदासराम.............

8. प्रेम भाव ह्रदय में □रकर-आरती जो गावे ,
सुमति प्रकाशे-स□ दुख नाशे-मुक्ति पद पावे ....
ओम जय गुरु हरीदासराम............

ओम जय गुरु हरीदासराम , स्वामी जय गुरु हरीदासराम ,
सतचित आनन्द ब्रह्म स्वरुपा-सर्वा सुखन खे दाम.....
ओम जय गुरु हरीदासराम.......

"सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की आरती"...

ओम जय गुरु टेऊँराम ,स्वामी जय गुरु टेऊँराम,
पर-उपकारी जगत उदारी,तुम हो पूरन-काम...
4.जब-जब प्रेमिनि निज हित कारण,तुम को पूकारा, {स्वामी }
तब-तब गुरु अवतार धरे तुम, सब को निस्तारा..
ओम जय गुरु टेऊँराम............
5. प्रेम प्रकाशी मन्डलाचार्या, मन्त्र साक्षी सतनाम, { स्वामी }
धर्म सनातन के प्रचारक, निति निपूण अभिराम...
ओम जय गुरु टेऊँराम........
6. देश विदेश में मन्डली लेकर ,पावन दे उपदेश, { स्वामी }
आतम रु□ लखाया सबको, हरिया ता□ कलेश...
ओम जय गुरु टेऊँराम........
4.□रन अचल समाधी तेरी सिध्द आसन बाजे,{ स्वामी }
रु□ मनोहर सुन्दर लोचन, देखते मन राजे......
ओम जय गुरु टेऊँराम.........
5.आत्म स्थित वचन के □रे , योगी ईनिद्रय जती, { स्वामी }
□रम उदारी धीरज धारी, □रम अगाध मती......
ओम जय गुरु टेऊँराम..............
6. धन-धन मात-□ता कुल तेरा, धन तव साधू-सुजान, { स्वामी }
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शूभ स्थान..
ओम जय गुरु टेऊँराम............
7. सुर-नर मुनि-जन हरिजन गुनी जन गावन गुन तुम्हरे, { स्वामी }
अन्त न □ाई सके नर कोई,महिमा अ□र-□रे....
ओम जय गुरु टेऊँराम....................
8.जो जन तुम्हारी आरती गावे, □ावे सो मुक्ती, { स्वामी }
साध-सग□ति को हरदम दीजे, □रन गुरु-भगती...
ओम जय गुरु टेऊँराम....
ओम जय गुरु टेऊँराम ,स्वामी जय गुरु टेऊँराम,
□र-उ□कारी जगत उदारी,तुम हो □रन-काम......

सतगुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज जी की आरती.....

ओम जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द,

धर्म करम का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द...ओम जय गुरु सर्वानन्द..

4. तुम हो दाता दीन दयालू, सबके हितकारी, { स्वामी }

शेष शरदा नित गुन गावे,महिमा अती बारी.......

ओम जय गुरु सर्वानन्द...............

5. तन पर चोला गेरु रंग का, सिर पे जटा धारी, { स्वामी }

कर कमलो में लाटी सोहे, मोहे नर नारी...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द...............

6. अपने गुरु की निज वचनो को, घर-घर पहूँचाया, { स्वामी }

भूले-भटके दीन जनो को सत मार्ग लाया.............

ओम जय गुरु सर्वानन्द.............

4.आधम उधारण कष्ट निवारण भगतनभव हरी, { स्वामी }

भाव जल तारण पार उतारण देह धारी...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द.............

5.देश-विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फेलाई, { स्वामी }

सोहम शब्द का मन्त्र दे वह ज्योति दिखलाई...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द............ज्ञ

6. अजर अमर ओर अज अविनाशी, घट-घट के ज्ञियाता, { स्वामी }

कण-कण में तुम सर्वव्यापक,पुरन गुरु दाता......

ओम जय गुरु सर्वानन्द................

7. परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी, { स्वामी }

शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी............

ओम जय गुरु सर्वानन्द............

8.टेँऊ राम के क्रपा पात्र तुम हो,भक्ती भण्डार, { स्वामी }

गुरु भगत बन गुरु भक्ती का खूब किया प्रचार.......

ओम जय गुरु सर्वानन्द...................

9. पूरण गुरु की पूरी आरती जो-जो नर गावे, { स्वामी }

पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण पद पावे...........

ओम जय गुरु सर्वानन्द..............

ओम जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द............,

सतगुरु स्वामी शान्ती प्रकाश महाराज जी की आरती.....

ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ती प्रकाश,
प्रेम के सागर, सतगुरु मेरे, मन में करो निवास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..........

1. मात-□िता थे धर्म की मूर्ती, उ□जा □ूत-स□ूत, { स्वामी }
बच□न में ही मन में जागी, क्रष्ण दर्श की प्यास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश...............

2. टेँऊराम के श्री चरणो में, जीवन सौं□ दिया, { स्वामी }
उनकी दया से □रम □द □ाया,अदभूत किया विकास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..............

3.वेद वानी ओर गुरुवाणी का , □ाया ज्ञान भण्डार, { स्वामी }
प्रेम प्रकाशी मण्डल में चमके, सूरज सम सुख रास......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश...............

4.देश-विदेश में भ्रमण करके, सब को मोह लिया, { स्वामी }
सतनाम साक्षी मन्त्र ज□ा कर,काटी यम की फास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश................

5. देश धर्म की रकक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया, { स्वामी }
दीन जनो की सेवा में ही □ाया □रम हूलास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश.................

6. एकादशी ओर गऊ सेवा का, खूब किया प्रचार, { स्वामी }
कण-कण में श्री क्रष्णा को देखा, किया भेद भ्रम नास......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..............

7.जो-जो दर्श करे सत्गूरु का, मन में रख विशवास , { स्वामी }
आशा उसकी □ूरण होवे,कारज होवन रास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..............

8. □ूरण शरदा से जो प्रेमी आरती यह गावे, { स्वामी }
सुख सम□ती ओर सुमती □ावे, अमरा□ुर हो वास.......
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..............

ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ती प्रकाश,
प्रेम के सागर, सतगुरु मेरे, मन में करो निवास.....
ओम जय गुरु शान्ती प्रकाश..........

सतगुरु स्वामी हरीदास महाराज जी की आरती...

ओम जय गुरु हरीदासराम , स्वामी जय गुरु हरीदासराम,
सतचित आनन्द ब्रहम स्वरुपा-सर्वा सुखन खे धाम.....
ओम जय गुरु हरीदासराम.......

6. अमरापुर से आये जोगी-लेकर सत सन्देश,
अमृतवाणी स□ सुख खानी-अमर किया उपदेश.......
ओम जय गुरु हरीदासराम...........

7. □लापन से गुरु चरणो में-मनवा तव लगा ,
घर को त्यागा भया विरागा, सत्गुरु रङ्ग पागा.......
ओम जय गुरु हरीदासराम.........

8. सत्गुरु टेँऊराम साहि□ में-अटल रख विशवास ,
सतनाम साक्षी जाप जपाकर-प्रेम किया प्रकाश.......
ओम जय गुरु हरीदासराम.........

9. सत्गुरु सर्वानन्द की सेवा-तन मन से कीनी ,
पूरण गुरु की कृपा पाकर-सूरति शब्द भीनी........
ओम जय गुरु हरीदासराम.......

10. निरमोही, निर्मान निसँगी-निर्भय निष्कामी ,
निरइच्छा हो जग में विचारे-सत्गुरु सुखधामी......
ओम जय गुरु हरीदासराम...........

6.त्यागा तपो मय जीवन दारे-सत्गुर गुण गाया ,
देश-विदेशा सत उपदेशा-स□ को पहुँचाया........
ओम जय गुरु हरीदासराम............

8 नभ में, जल में पावक थल में-ज्योति तेरी जागे ,
श्रदा से जो शरनी आए-भय ताक्रा भाग ......
ओम जय गुरु हरीदासराम.............

8. प्रेम भाव ह्रदय में □रकर-आरती जो गावे ,
सुमति प्रकाशे-स□ दुख नाशे-मुक्ति पद पावे ....
ओम जय गुरु हरीदासराम............

ओम जय गुरु हरीदासराम , स्वामी जय गुरु हरीदासराम ,
सतचित आनन्द ब्रहम स्वरुपा-सर्वा सुखन खे दाम.....
ओम जय गुरु हरीदासराम.......

दोहावली

1. परम पावन गुरु , तेरी हूँ दावन गुरु ,
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाईये,
हम हें अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाईय,
तरन तारन गुरु , करन कारन गुरु ,
विघन टारन गुरु , बिगडी बनाईय ,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी पति गुरु,
उची कर मति गुरु ,चरन लगाइये.............

2. परम दयाल गुरु , परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये,
सुन्दर सुचाल गुरु ,नित ही निहाल गुरु ,
अमर अकाल गुरु , यम से बचाइये ,
गो□न्द गोपाल गुरु ,प्रभू प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, □न्धन छुडाइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी पति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

3. परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आदारी गुरु, नाम को जपाइये,
पर दुखी हारी गुरु, पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरि से मिलाइये,
नित अवतारी गुरु, शुभगुण कारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी पति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

4. शाहन के शाह गुरु, सच्चा पातिशाह गुरु,
बिन □रवाह गुरु, वि□ति हटाइये,
बेवाहन वाह गुरु, बेराहन राह गुरु,
गुणन अथाह गुरु, मारग बतलाइये,
दया के दर्याह गुरु, दोषन के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु, मोहि ना भुलाइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी □ति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

5. राजन के राज गुरु, सन्त सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु, मोहि अ□नाइये,
गरीब निवाज गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
□ूरे कर काज गुरु, अज्ञान उडाइये,
भव जल □ाज गुरु, सुखन ,समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी □ति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

6. ब्रहम के स्वरु□ गुरु, आत्म अनू□ गुरु,
अमल अरु□ गुरु, व्दन्व्द को गलाइये,
अगम अगाघ गुरु, अमर अबाघ गुरु,
अचल अनान्द गुरु, अभेद बनाइये,
देवन के देव गुरु, अलख अभेव गुरु,
अटल अखेव गुरु, सरु□ लखाइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी □ति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

7. पूरण सुज्ञानी गुरु, पूरण सुध्यानी गुरु,
पूरण सुदानी गुरु, प्रेम को पिलाइये,
शरण पालन गुरु, संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु, दरस दिखाइये,
करुणा निधान गुरु, सद महरबान गुरु,
करले कल्याण गुरु, सुमति सिखाइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी पति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

8. निओटन ओट गुरु, काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो यम चोट गुरु, पापन पलाइये,
वीरन के वीर गुरु, धीरन के धीर गुरु,
पीरन के पीर गुरु, शान्ति में समाइये,
तुम धन-धन गुरु, में हूँ तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु, दोषन दिलाइये,
कहे टेँऊ सतगुरु , रखो मेरी पति गुरु,
उची कर मति गुरु , चरन लगाइये......

9.गुरु बिन गति नाहि ,गुरु बिन मति नाहि ,
गुरु बिन सूझत न ,सूरति सुज्ञान की ,
गुरु बिन सुधि नाहि , गुरु बिन बुव्दि नाहि ,
गुरु बिन आवत न विरति विज्ञान की ,
गुरु बिन जत नाहि , गुरु बिन सत नाहि,
गुरु बिन लागत न निरति, सू ध्यान की ,
गुरु बिन नीति नाहि , गुरु बिन रीति नाहि,

कहे टेँऊ होत नहि प्रीति भगवान की...

10.गुरु हे सागर सम , रतन हे ज्ञान तामें,
जोई सेवे सोई □ावे रतन विज्ञान को,
गुरु हे मलाह सम ,नाम नाव चाढ् कर,
□ार □हुँचाय देत मोक्ष के स्थान को ,
वैध के समान गुरु नाम की दवाई देके,
दून्दू रोग दूर कर करत कल्याण को ,
कहे टेऊँ रवि गुरु वचन किरण जाकें ,
ज्ञान का प्रकाश कर हरत अज्ञान को,

11. गुरु शशि सूर्य सम हरत त□त तम,
गङ्गा के समान गुरु □ावन करत हें,
गुरु अज देत गुन गुरु हरि रक्षा करे,
शङ्कर समान गुरु संशय हरत हें,
बादल समान गुरु वर्षा वचन कर
शिष्य का ह्रदय नित गुणो से भरत हें,
कहे टेऊँ गुरु सेव कर निज □ाओ भेव ,
गुरु के प्रसाद सब कारज सरत हें,

12. गुरु देव माहि जन धार सत्य भाव मन,
दोष द्रष्टी सब हें गुण शुभ गहीये ,
रजो गुन विधि दिस सतो गुण माहि ईस ,

तम हर धर सीस भार शेष सहिये,
शीत चन्द्र तेज सुर शील राम काल चुर ,
बाण ले □ार्थ सूर राज इन्द्र कहिय,
विध्न हर गण□ति दुष्ट □ले राधा□ति ,
विज्ञानी वसिष्ठ अति कहे टेऊँ लहिये,

13. स्वर्ग सीस वायू प्राण रवि शाशि नैन जान,
दषों दिश जांके कान मुख शिखी मानिये,
चरन □ताल इन्द्र हाथ निस दिन नाक,
दान्त काल धड नभ □ट सुन जानिये ,
सिन्धू मूत्र नदी नाढी बन र□म गिरि हाढ,
तारे तत मेघ गुन बुध्दि बीज गानिये
कहे टेउँ कर जा□ कर श्री गुरुदेव वर ,
जांके □ण्ड मांही ब्रह्माण्ड ही बखानिए ,

14.क□ कहे □ज हर हरि देवी विधि सुर .
गंगा आधि तीर्थ चर गणेश गनाय□ हैं ,
नृसिंह बावन राम सूर शशि शेष शयाम ,
सुरधैन शालीग्राम सुरेश सुनाय□ हैं,
अगनी □वन □नी शारदा निगम बनी ,
ब्रहस□ती बल दानी धनेश जनाय□ हैं ,
कहे टेऊँ ऐसी बात सुन मन भरमात ,
गुरुदेव देके दात आतम लखाय□ हैं ,

15. दीननाथ दीनबन्दू दया के अथाह सिन्धु ,
शीतल स्वरु□ इन्दू त□त निवारे हैं ,
दुख हर सुख सर शील घर धीर धर ,
नतचर दुष्ट जर धर्म ध्वजा धारे हैं,
ब्रह्मावेटा ब्रहमज्ञानी ब□त सू ब्रहमबानी ,
ब्रहमज्ञान के सू दानी भजन भण्डारे हैं,
कहे टेऊँ कर ज□ मेरे गुरु शिरम□ ,
म□ के धन्दन छ□ जनम सुधारे हैं ,

16. देवन के देव गुरु □शु से मानुष कर ,
मानुष ते करे सुर कुनीर ज्यों गंगा हैं ,
नीम क□ चन्दन तर सूली से कण्टक कर ,
अन्ध देव नैन वर देखे सर्व रंग हैं,
काक ही सों हंस ह□ कीट ही से भृँग ज□ ,
ल□ स□ कंचन ल□ □लटाय अंग हैं,

कहे टेऊँ जागे पुन गहे गुरु का वचन ,
भया जड से चेतन ऐसा गुरु संग हैं,

17. सतगुरु सुरतरु पुरन सु काम कर ,
चन्दन पारस सर पलटाय अंग हैं ,
दिनकर के समान अविध्या तिमिर हान ,
जौहरी परख जान पाप हत गंग हैं,
मात तात भ्रात मीत शिष्यन को पाले नीत,
गोरख ज्यों गाय गीत तोडे मोह संग हैं ,
कहे टेऊँ गुरुवर रजक समान तर ,
पापन की मैल हर लावे राम रगं हैं ,

18.गुरु के वचन सुन भया निरभ्रान्त मन,
जीव ब्रह्मारुप भया ध्यान धुनि लायके ,
देखी यह विश्र सारी रज्जु □ीच सा□प सम ,
भागा भ्रम देखा ज्ञान दीपक जगायके ,
गुरु के सु ज्ञान कर छेदी ग्रन्थि चिद चड़ ,
आतम साक्षात कीना पडदा उठायके,
सतगुरु पै वार वार जाऊँ □लि □लिहार ,
कहे टेऊँ मुक्ति कीना वचन सुनायके ,

19. जैसे रति अलि फूल साप□ □ीन सन झूल ,
योगी जन कद□ मूल मारवाड □न को,
सीप पापीहा चकोर □ूद□ चन्द्र सझ भोर,
थाके नर नी□द घोर सत्यवादी पन को ,
मोर रति धन □ीच दादर सनेह कीच ,
रोगी दवा दुखी मीच मृग चहे □न को ,
कहे टेऊँ भुखे अन्न □छडे सुरही धन ,
तैसे चाहे मेरा मन गुरु दर्शन को,

20. जैसे प्रीति चल मीन मधुरिख मधुलीन,
अलि कझ्ण मृग □न चन्द से चकोर हैं,
अनल पछी आकाश पतड देख प्रकाश,

गऊ बछडे के पास बादल से मोर हें,
चन्दन सरप पून चातक स्वाति धन,
चकवी को पत्ति मन रैन रति चोर हें,
कहे टेऊँ निशदिन योगी योग चाहे मन,
तैसे गुरु दर्शन प्यास सझ□भोर हें,

21. जैसे रति धन मोर हंस सर रहे चोर ,
सूर तेग कोक भोर कंगाल को दाम हें,
मृग□नाद मीन नीर शूनी मास□नाग खीर,
युवति भुषण चीर कामी नर वाम हें,
कोकल को आम प्रेम विप्र व्रत नेमी नेम,
पतनी खाशम क्षेम सतनि को राम हें,
कहे टेऊँ हरिजन सौंप स्वाँति मूढ तन,
तैसे मोहि निशदिन प्यारो गुरु नाम हें,

<u>....सोलाह शिक्षायें....</u>

सोला शिक्षायें सुनो , सुखदावक हैं जो
कह□टाँ सकट कट□, द□ परम गती सोय□.

1. आधी फल विचार क□ तुम , कर पीछ□ सब काम जी,
यह वचन मन में दर , पाय□ सुख आराम जी....

2. उधम कर शुभ कर्म करना , सीख यही सर ह□,
भाग पर कुछ नाही रखो , व□ ग्रन्थ पुकार ह□

3. समय का अती कदर करना ,कोही ना कुसन्ग में,
जो बच□ व्यहार स□ सफल कर सत्स□ में...
4. सर्वा स□ तुम गुना उटाओ , दोष दर्षटी को हर□
दख अवगुण अपना जो , बहुत ह□ मन में भर□.

5. सर्व जीवों स□ करो हित , निन्दा किसकी ना करो,
ना बुरा चाहो किसीका , भाव शुध हृदय धरो...

6. जीव किसीका ना दुखाओ, दया सब पर कीजिय□
राम व्यापक जान सब में , दव□ को हर लिजिय...

7. समय जो गुजर जाव□, याद ना तुम तिह□ करो,
आन□ वाल□ वकत की भी , चिन्ता मन में नाही कर...

8. जो बनाव□ ईश्वर तुम , झूठ ना कब बोलना ,
जा बनी सा ह□ बली , सब यों सदा मुख स□ कहो....

9. अपन□ स्वारथ क□ लिए तुम, झूठ ना कब बोलना ,
वचन सचा मधर हो जब , तबही मुख को खोलना...

10. शरण त□ी आव□ जो , ताहि□ द□ समान जी ,

याद वरी होय तो भी , ना करो अपमान जी..

11. और का उपकार कर तुम , छोर स्वारथ अपना ,
लोक पुनी परलोक में कब , होय तुमको तपना..

12. धर्म अपन□में हरदम , प्यार कर नातना नाही□,
सीस जाव□जान द□, पर धर्म स□हटना नाहि□.

13. मोत अपना याद करल□, तिही□बुलो ना कभी ,
जान मन में मरन का दिन , निकट आया अभी..

14. धर्म शाला जान जग को , जीव सब महमान हैं ,
मोह किसी का ना करो , सब स्पन सम समान हैं....

15. वद्द गुरु क□ वचन पर , नित तुम करो विश्वास जी ,
अटल शरदा दर मन में , भ्रम कर सब नास जी....

16. आधी मन्त्र ल□गुरु स□, जाप जप दर ध्यान को ,
जगत बन्दन तोर विचारो , पाय□आतम ज्ञ्यान को ...

यह शिक्षा याद कर , मन में पुनी विचार ,
कह□टाऊँ करनी कर□, भव निधी उतरो पार...

अमरापुर अमृतवाणी

1.मैं माँगत नहीं और कुछ, संत दरस हरि देह.
कहे टेंऊ दर्शन करे , सफल कँरु तन एह....
2. सतगुरु मुझ को दान दे, प्रेम भत्ति विशवास,
कहे टेऊँ नित सुमती दे, सन्त नी माहि निवास.....
3. कहे टेँऊ हरि नाम जप , भूलो ना क्षण एक ,
भोगत- भोगत विषय़ रस, बीते जनम अनेक....
4. मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार,
कहे टेँऊ तिहं य़ाद कर, सुमरो सतकरतार.....
5. चौरासी लख य़ोनी का मनुष्य हे सरताज,
कहे टेँऊ हरि भजन का, कर इस तन में काज...
6. कहे टेऊँ तुम चेत ले , अब कुछ बिगडी नाहि,
दय़ा धर्म सब कर्म कर, हरि सुमरो मन माहि...
7. बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार,
टेँऊ बुराई जो करे , तांका कर उपकार.....
8. जिन -जिन हरि के प्रेम में , दीना तन- मन प्राण,
टेँऊ तिन के कदम पर, झुक-झुक पङत जहान.....
9. संत राम में भेद नाहि , संत राम स्वरुप,
कहे टेँऊ रट राम को, भहे राम के रुप.....
10. क्रोध त्य़ाग क्षमा धरे , सो हैं पुजम य़ोग,
कहे टेँऊ तिस दरस ते, मिट जावत सब रोग.....
11. संत समागम सम नही, सादन को जग माहि,
कहे टेँऊ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहि.....
12. पार करत भव सिंधू से, सत्संग प्रेम जहाज,
कहे टेँऊ तामे चङो , छोङ जगत की लाज....
13. कहे टेँऊ भगवान से , सतगुरु अधिक पछान,
कर्मो का फल देत हरि, गुरु दे मुक्ति दान......

14. गुरु बिन रंग ना लागही, गुरु बिन ज्ञान न होय़
कहे टैँऊ सतगुरु बिना, मुक्ति ना पावे कोय़....
15. टैँऊ दीपक ज्ञान बिन ,शोभत धाम न देह,
गुरु बिन ज्ञान न होत हैं,ताँते गुरु कर लेह...
16. गुरु बिन प्रेम न उपजे, गुरु बिन जागे न भाग,
कहे टैँऊ ताँते सदा, गुरु चरणों में लाग........
17. गुरु की सेवा जो करे, गुरु की आज्ञा मान,
कहे टैँऊ गुरु नाम रट, गुरमुख सो पहचान....
18. सुख-दुख में त्य़ागे नही, सतगुरु का जो संग,
कहे टैँऊ तिस दास को, लगे राम का रंग......
19. मैं मेरा गुरु चरण में, जो जन भेंट चढाय़े,
कहे टैँऊ तिस दास के, काल निकट नही आय़...
20. गुरु को जे नहि सेवही , ते नर ठोर न पाय़े,
कहे टैँऊ गुरु सेव बिन, जनम-जनम पछताय़े..
21. राम नाम सत्य़ वचन पुनि, मघुर न बोलत जोय़,
टैँऊ दूजे जनम में, सो नर गूँगा होय़....
22. कर माला मन ध्य़ान धर, रसना से रट राम,
कहे टैँऊ इस जाप से, पाओ हरि का धाम....
23. मुख से सुमरण ना करे, कर से देहि न दान,
कहे टैँऊ तिस मनुष्य़ का, जीवन वृथा जान....
24. भक्ति करनी कठिन हैं, सुगम न तँको जान,
टैँऊ भक्ति सो करे, त्य़ागे जो अभिमान......
25. मन चंचल के शान्ति हित, एक हरि का ध्य़ान,
टैँऊ हरि के ध्य़ान बिन, मिले ना शान्ति सुजान....
26. हरीजन देखत सर्व को, एक हरि का रुप,
दुर्जन नाना दृष्टि कर, पङत नरक के कूप...
27. रहनी बिन तन भेष धर, संत न कहिय़े सोय़,
कहे टैँऊ सो संत हैं, रहनी रहता जोय़..
28. टैँऊ पारस और को, करत न आप समान,

साधू दीपक भृंग ज्यों, निज सम करते आन...

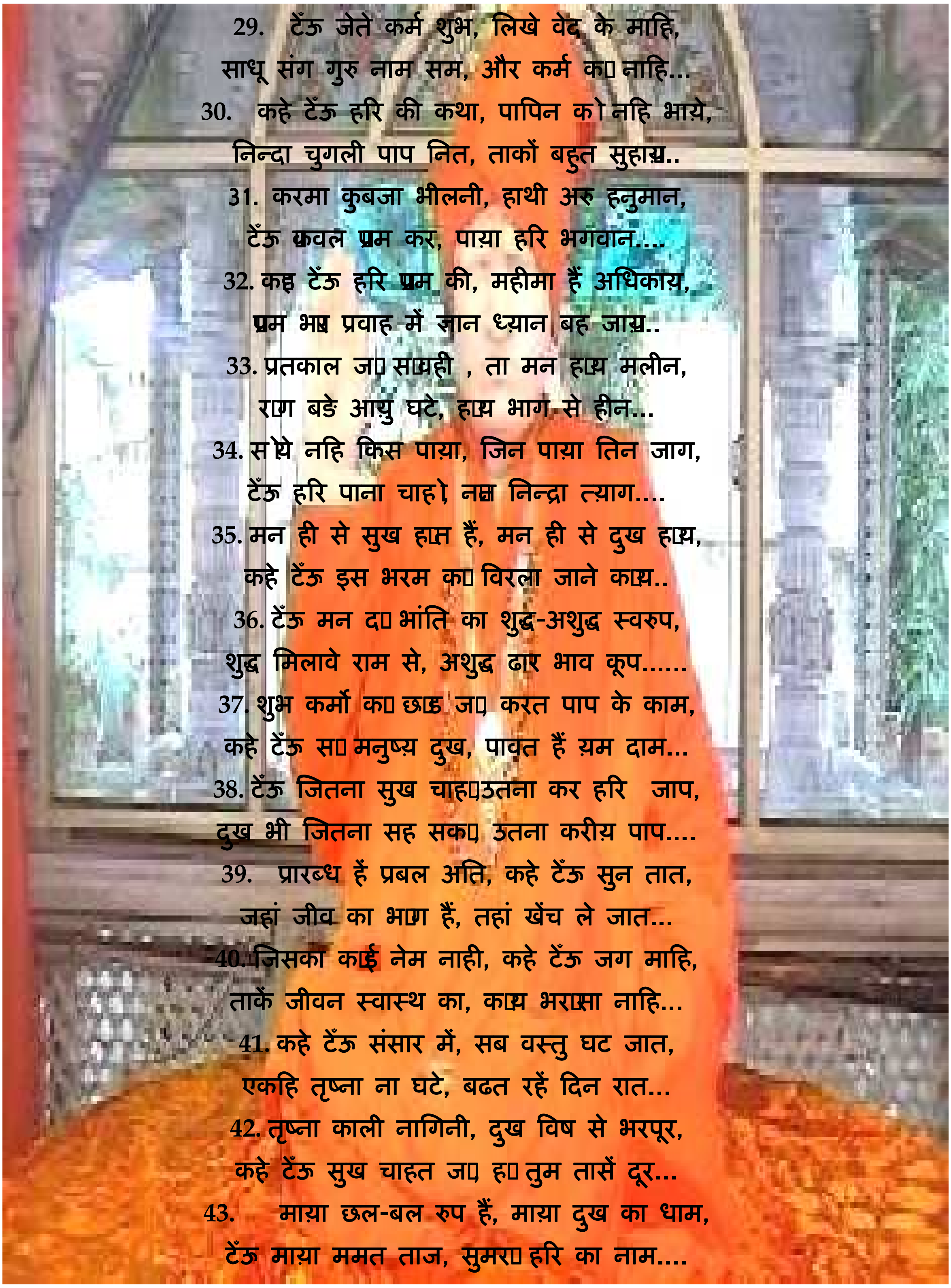

29. टेंऊ जेते कर्म शुभ, लिखे वेद के माहि,
साधू संग गुरु नाम सम, और कर्म को नाहि...
30. कहे टेंऊ हरि की कथा, पापिन को नहि भाये,
निन्दा चुगली पाप नित, ताकों बहुत सुहाये..
31. करमा कुबजा भीलनी, हाथी अरु हनुमान,
टेंऊ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान....
32. कहे टेंऊ हरि प्रेम की, महीमा हैं अधिकाय,
प्रेम भाव प्रवाह में ज्ञान ध्यान बह जाये..
33. प्रतकाल जो सोवही , ता मन होय मलीन,
रोग बडे आयु घटे, होय भाग से हीन...
34. सोये नहि किस पाया, जिन पाया तिन जाग,
टेंऊ हरि पाना चाहो, नेत्र निन्द्रा त्याग....
35. मन ही से सुख होत हैं, मन ही से दुख होय,
कहे टेंऊ इस भरम को विरला जाने कोय..
36. टेंऊ मन दो भांति का शुद्ध-अशुद्ध स्वरुप,
शुद्ध मिलावे राम से, अशुद्ध डारे भाव कूप......
37. शुभ कर्मो को छोड जो करत पाप के काम,
कहे टेंऊ सो मनुष्य दुख, पावत हैं यम दाम...
38. टेंऊ जितना सुख चाहो उतना कर हरि जाप,
दुख भी जितना सह सको उतना करीय पाप....
39. प्रारब्ध हैं प्रबल अति, कहे टेंऊ सुन तात,
जहां जीव का भोग हैं, तहां खेंच ले जात...
40. जिसका कोई नेम नाही, कहे टेंऊ जग माहि,
ताके जीवन स्वास्थ का, कोय भरोसा नाहि...
41. कहे टेंऊ संसार में, सब वस्तु घट जात,
एकहि तृष्णा ना घटे, बढत रहें दिन रात...
42. तृष्णा काली नागिनी, दुख विष से भरपूर,
कहे टेंऊ सुख चाहत जो हो तुम तासें दूर...
43. माया छल-बल रुप हैं, माया दुख का धाम,
टेंऊ माया ममत ताज, सुमरो हरि का नाम....

44. माय़ा कारण लङत सब, टेंऊ लोक तमाम,
□टा लङता □ाप से,पति से लङती वाम..
45. निन्दक जैसा मीत नाहि, टेंऊ जगत मंझार,
पुण्य़ देत हैं अपना, लेहि पाप का भार.....
46. सर्व वस्तु भगवान की और किसी की नाहि,
टेंऊ अपनी जान के, गर्व न कर मन माहि.....
47. टेंऊ मैं मेरा तजे , कर प्रभू से तुम प्य़ार,
सबका कर्ता हैं वही, काहि करता अंहकार...
48.जाँको भय़ नहि काल का, सो नित करता पाप,
टेंऊ भय़ जिहं करत सो, पाप तेज हरि जाप...
49.आशा तृष्ना ईष्य़ा, चोथी चिन्ता आग,
टेंऊ इसमे जलत सब, बाचे को बड भाग...
50. दशों दिशा में रम रहा, एक राम भरपूर,
कहे टेंऊ अज्ञान कर, मुरख जानत दूर....
51.विशवास घाती कृत्धन व्य़भिचारी ठग चोर,
कहे टेंऊ इन पाँच को, तीन लोक नाहि ठोर....
52. रे मन तेरा जगत में, दो दिन का हैं वास,
कहे टेंऊ य़ों समझ के, तज भोगों की आस...
53. रैन गय़ी पुन दिन भय़ा, दिवस गय़ा भरी रात,
कहे टेंऊ मन चेत ले, आय़ु ऐसे जात....
54. तिल भर दौलत ना चले, दर तक चाले नार,
मित्र चले श्मशान तक, धर्म चले सुर द्वार
55. पाँच तत्व का पिँजरा, तामे पंछी प्राण,
कहे टेंऊ जब उड़ चला, तब तन सूना जान...
56. और मरे क्यों रोवते,रोवहू अपने हेत,
ईक दिन तुम भी जाय़ेंगे, छोङ जगत का खेत..
57. कहे टेंऊ इस जगत में, देखा सुखी ना कोय़,
भूप बली पडिंत गूनी, सब ही दुख से रोय़..
58. ज्ञान बिना नर मूंड हैं, ज्ञान बिना पशु जान,
कहे टेंऊ निज ज्ञान जिहं, सोन नर देव समान...

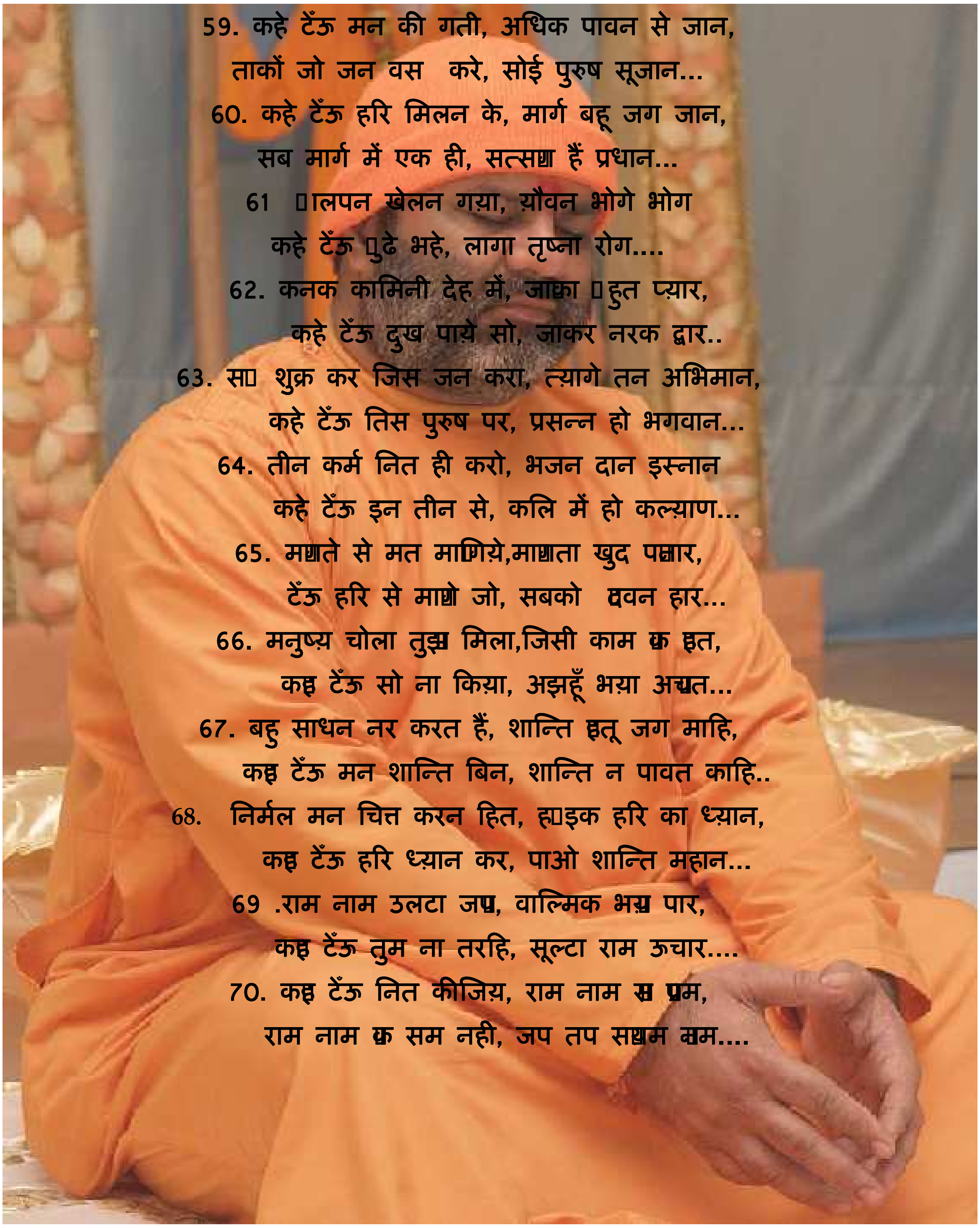

59. कहे टैँऊ मन की गती, अधिक पावन से जान,
ताकों जो जन वस करे, सोई पुरुष सूजान...
60. कहे टैँऊ हरि मिलन के, मार्ग बहू जग जान,
सब मार्ग में एक ही, सत्सङ्ग हैं प्रधान...
61 □ालपन खेलन गया, यौवन भोगे भोग
कहे टैँऊ □ुढे भहे, लागा तृष्ना रोग....
62. कनक कामिनी देह में, जाका □हुत प्यार,
कहे टैँऊ दुख पाये सो, जाकर नरक द्वार..
63. स□ शुक्र कर जिस जन करा, त्यागे तन अभिमान,
कहे टैँऊ तिस पुरुष पर, प्रसन्न हो भगवान...
64. तीन कर्म नित ही करो, भजन दान इस्नान
कहे टैँऊ इन तीन से, कलि में हो कल्याण...
65. मङ्गाते से मत माङ्गिये,माङ्गता खुद पुकार,
टैँऊ हरि से माङ्गो जो, सबको देवन हार...
66. मनुष्य चोला तुझ मिला,जिसी काम के हेत,
कहे टैँऊ सो ना किया, अझहूँ भया अचेत...
67. बहु साधन नर करत हैं, शान्ति हेतू जग माहि,
कहे टैँऊ मन शान्ति बिन, शान्ति न पावत काहि..
68. निर्मल मन चित्त करन हित, हे□इक हरि का ध्यान,
कहे टैँऊ हरि ध्यान कर, पाओ शान्ति महान...
69 .राम नाम उलटा जपा, वाल्मिक भया पार,
कहे टैँऊ तुम ना तरहि, सूल्टा राम ऊचार....
70. कहे टैँऊ नित कीजिय, राम नाम से प्रेम,
राम नाम के सम नही, जप तप संयम नेम....